प्रकाशन तिथि : 15 नवम्बर, 2019
प्रेषण तिथि : 19 नवम्बर 2019

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 17 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

पन्द्रह दिन में आठ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा बताए मार्ग पर चलकर क्षात्रधर्म को सामाजिक जीवन में पुनः प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला अनवरत जारी है। इसी क्रम में 29 अक्टूबर से 12 नवंबर की अवधि में दो बालिका शिविरों सहित कुल आठ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुए। इनमें 2 सात दिवसीय शिविर भी सम्मिलित है।

गुजरात में बनासकांठा प्रान्त के अंतर्गत बालिकाओं का सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर रोयल शैक्षणिक संकुल, रमणुं में 01 से 07 नवम्बर की अवधि में आयोजित हुआ। इस शिविर में 59 गांवों की 231 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जाखडी, वलादर, रामसन, सामलवाडा, केसरगाँव, उबरी, लवारा, राहसिया, काणेटी, चारडा, रानेर, धामसन, मडाना, वाघासण, थराद, घोडासर, जोधपुर, माडका, जालोढा, अरणीवाडा, चिभडा, करबुण, शाहपुर, मांडल, कुडा, जलोद, पीलुडा, सातसण, जडिया, भाटवर, गोलवी, नालोदर, कंम्बोई, जाड़ी, आरखी, धुणसोल, पांथावाड़ा, ईढाटा, जसरा, पांसवाल, ताजा लाखणी, भीलाचल, डुवा, सांचोर, जोडवास, पालड़ी, केसरगाँव, आलवाडा, नेगाला, धानेरा, छेल्ली घोड़ी, अनापुर, विरोल और विरोल बडी गांवों से बालिकाएं शिविर में सम्मिलित हुईं। शिविर में बालिकाओं को अंतिम तीन दिन माननीय संघप्रमुख श्री का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। शिविर का संचालन जागृति कंवर हरदासकाबास ने किया। उन्होंने बालिकाओं को बताया कि क्षात्रधर्म ही संसार के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है और समाज की भावी पीढ़ी को क्षात्रधर्म का पाठ पढ़ाने और उसके पालन में प्रवृत्त करने का दायित्व हमारा ही है। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा भी शिविर में उपस्थित रहे। नारायण सिंह उटवेलियाने, अजित सिंह कुणघेर, डूंगरसिंह चारड़ा तथा हीरसिंह जाड़ी ने व्यवस्था में सहयोग किया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मैं अपना हक खुद चुकाऊंगा : संघ प्रमुख श्री

आप साथ रहे या न रहे यह आपका हक है लेकिन मैं जीवन भर आपके साथ रहूं यह मेरा हक है और मैं अपना हक खुद चुकाऊंगा। आपको जीवन में अपनी परेशानियां होंगी ऐसा मैं सोचता हूं लेकिन मेरी कोई परेशानी मुझे आपसे दूर नहीं कर सकती। काणेटी (गुजरात) में आयोजित सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन पर विदाई संदेश के रूप में माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि उम्र ढलने के कारण शरीर की क्षमताएं क्षीण हो रही हैं, संकेत मिल रहा है कि दायित्व नए लोगों को सौंपना चाहिए, बस उन्हीं चेहरों को देखने आता हूं कि वे कौन हैं जिनके कंधों पर इस प्रकार का भार सौंपा जाए, वे कौन हैं जो ये कह सकें कि जो दायित्व मुझे दिया है वो मैं जीवनभर निभाऊंगा। वचन नहीं बल्कि प्रस्तुत होता हुआ सा दिखाई पड़े। हर शिविर में जाता हूं, गहराई से आपके चेहरों को देखता हूं, आपके मन को पढ़ने का प्रयत्न करता हूं, आपकी बौद्धिक क्षमताओं को जानने का प्रयत्न करता हूं, भावनाओं को जानने का प्रयत्न करता हूं, विभिन्न प्रयोग करता हूं और वे प्रयोग भी कई बार आपको खतरे में डाल देते हैं। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि मेरा बस इतना ही आग्रह है कि थकना मत क्यों कि थोड़े ही कदमों के दूर आपका तकदीर आपको ढूंढ़ रहा है, हमारा भाग्य हमें निहार रहा है। कभी निराश न हों क्यो कि यदि हमने जीवन भर इस कौम में काम करने की, जगाने की ईच्छा से काम किया है तो वह ईच्छा पुनः हमें यहीं जन्म देगी और हम पुनः इसी मकसद से इसी प्रांगण में आश्रय लेंगे। बस कर्तव्य मार्ग पर चलते जाएं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन ने जताया मुख्यमंत्री का आभार

'सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाकर नेतृत्व करें'

आमजन के लिए सरकार की विभिन्न योजनाएं संचालित हैं। उन सभी योजनाओं का अध्ययन कर उन्हें जरूरतमंद तक पहुंचाने में समाज का नेतृत्व करें एवं अधिकतम लोगों को लाभ दिलवाएं। इसी से समाज में सर्वोपयोगी नेतृत्व तैयार होगा। 30 अक्टूबर को मुख्यमंत्री आवास पर आर्थिक आधार पर आरक्षण की विसंगतियां दूर करने पर मुख्यमंत्री जी का आभार जताने पहुंचे श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उपर्युक्त बात कही।

उन्होंने कहा कि आर्थिक आधार पर आरक्षण बाबत उनके इस फैसले पर आ रही लोगों की प्रतिक्रिया यह सिद्ध करती है कि उनका यह फैसला सर्वोपयोगी है एवं इससे विभिन्न समाजों के बीच सामंजस्य एवं समरसता बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि उन्होंने पहले भी इस तरह का प्रयास किया था लेकिन संविधान संशोधन के अभाव में लागू नहीं हो पाया लेकिन अब केन्द्र सरकार ने संविधान में संशोधन कर दिया जिसके कारण हमने यहां लागू भी किया एवं अब अव्यवहारिक शर्तें हटाकर इसे सरल भी बना दिया है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

सरकार द्वारा संचालित सार्वजनिक सेवाएं राष्ट्रीय संपति होती है। राष्ट्र की संपति अप्रत्यक्ष रूप से जनता की संपति होती है। उन सभी का संचालन जनता द्वारा उन सेवाओं के बदले में चुकाए गए प्रतिफल से ही संभव होता है। नागरिक भाव यह कहता है कि प्रत्येक नागरिक को उस हर सेवा के बदले अपना प्रतिफल चुकाना चाहिए जो उसने राष्ट्र से प्राप्त की है, सरकार से प्राप्त की है। कृतज्ञता मानवता का सबसे बड़ा गुण है और कृतज्ञता ज्ञापन केवल वहीं नहीं किया जाता जहां कोई देख रहा हो। किसी को दिखाने के लिए कृतज्ञता ज्ञापन तो एक नाटक ही बन जाता है। फिर वह कृतज्ञता केवल व्यक्ति के प्रति ही नहीं बल्कि समाज, राष्ट्र एवं राष्ट्र की सरकार के प्रति भी उतनी ही गंभीरता से प्रकट की जानी चाहिए और इसके लिए सरकार द्वारा एक आम नागरिक को मिलने वाली प्रत्येक सुविधा का समुचित प्रतिफल भी चुकाना चाहिए। भारतीय रेल भारत की जनता के लिए भारत की सरकार का एक ऐसा ही उपक्रम है। बिना टिकट यात्रा करने के लाखों उदाहरण प्रतिदिन संज्ञान में आते रहे हैं जो इस व्यवस्था के सफल संचालन में बाधक हैं। प्रायः ऐसा करना हम कोई बड़ा अपराध भी नहीं मानते क्योंकि हम तो इसे सरकारी मानकर उपेक्षा ही करते हैं। लेकिन महापुरुषों के लिए कृतज्ञता बहुत बड़ा गुण होता है। वे कभी किसी का ऋण लेकर नहीं चलते बल्कि स्वयं के लिए किसी अन्य के द्वारा किए गए प्रत्येक कार्य का प्रतिफल चुकाने को सावधान रहते हैं। ऐसी कृतज्ञता के पर्याय थे हमारे प्रणेता पूज्य तनसिंह जी। उनका मानना था कि यदि किसी ने मुझे पानी का एक गिलास भी पिलाया है तो मैं उसका ऋणी हो जाता हूं। सांसद रहते हुए वे सरकार द्वारा स्वयं पर किए गए खर्च का भी हिसाब रखते थे और उसके अनुरूप अपना सर्वोत्तम योगदान देने का प्रयास किया करते थे। ऐसी ही एक घटना उनकी युवावस्था की है जब उन्होंने बाड़मेर में नई-नई वकालात प्रारम्भ की थी। वकालात संबंधी किसी काम के लिए उन्हें बालोतरा जाना पड़ा। बालोतरा से वापस लौटने के लिए वे स्टेशन पहुंचे तब तक ट्रेन आ गई और उनको टिकट खरीदने का अवसर नहीं मिला। बाड़मेर स्टेशन पर उतरने के बाद वे स्टेशन के गेट पर रुक गए तो टिकट चैकर ने उन्हें कहा 'पधारिए'। उन्होंने कहा, जाऊं कैसे, मेरे पास टिकट नहीं है। कर्मचारी ने कहा आपसे टिकट कौन मांग रहा है? पूज्य श्री ने कहा कि आपके न मांगने से मेरा अपराध कम नहीं हो जाता, कृपया जुर्माने सहित राशि स्वीकार कीजिए। टिकट की राशि व जुर्माना चुकाकर ही वे आगे बढ़े।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... **- अभयसिंह रोडला**

विगत अंको में हमने दसवीं कक्षा के पश्चात विषय चयन, प्रमुख विषय-वर्गों की सामान्य जानकारी तथा विभिन्न विषय-वर्ग के अभ्यर्थियों हेतु उपलब्ध कैरियर विकल्पों पर चर्चा की। अब हम विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे। इस अंक में हम एन. डी. ए. परीक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

'एन. डी. ए.'

एन.डी.ए. अर्थात नेशनल डिफेंस एकेडमी। यह भारतीय रक्षा बलों (थलसेना, वायुसेना, नौसेना) हेतु अधिकारियों को प्रशिक्षित करने वाला प्रशिक्षण संस्थान है। इस संस्थान में प्रवेश हेतु ली जाने वाली परीक्षा को ही एन.डी.ए. परीक्षा के नाम से जाना जाता है। यह परीक्षा यूपीएससी (संघ लोक सेवा आयोग) द्वारा आयोजित की जाती है। यूपीएससी द्वारा यह परीक्षा वर्ष में दो बार आयोजित की जाती है, सामान्यतया अप्रैल व सितंबर माह में।

योग्यता- यह परीक्षा केवल अविवाहित पुरुष अभ्यर्थी ही दे सकते हैं। न्यूनतम आयु सीमा साढ़े सोलह तथा अधिकतम साढ़े उन्नीस वर्ष है। इस परीक्षा में भाग लेने हेतु न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता 12वीं कक्षा उत्तीर्ण होना है, यद्यपि बारहवीं की परीक्षा दे रहे अभ्यर्थी भी आवेदन कर सकते हैं। वायुसेना हेतु आवेदन करने वाले अभ्यर्थी के लिए बारहवीं कक्षा गणित, भौतिक विज्ञान व रसायन विज्ञान विषयों के साथ उत्तीर्ण होनी चाहिए जबकि थलसेना व नौसेना के लिए किसी भी विषय वर्ग के अभ्यर्थी द्वारा आवेदन किया जा सकता है।

परीक्षा प्रणाली/पैटर्न- इस परीक्षा में दो प्रश्नपत्र होते हैं - गणित तथा सामान्य योग्यता परीक्षा (जनरल एबिलिटी टेस्ट GAT)। गणित का प्रश्नपत्र 300 अंको का होता है तथा पूछे जाने वाले प्रश्न 12वीं कक्षा के स्तर के होते हैं। GAT का प्रश्नपत्र 600 अंको का होता है तथा इसमें अंग्रेजी, सामान्य ज्ञान तथा सामान्य विज्ञान के प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए 2.30 घंटे का समय मिलता है तथा दोनों प्रश्नपत्रों में गलत उत्तरों के लिए नकारात्मक अंकन होता है।

परीक्षा में चयनित अभ्यर्थियों को SSB साक्षात्कार से गुजरना होता है तथा उसमें सफल अभ्यर्थियों का चिकित्सकीय परीक्षण किया जाता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

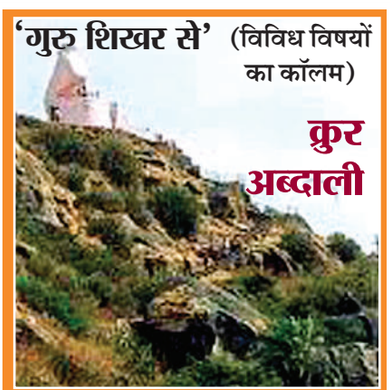

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

क्रूर अब्दाली

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

आमेर से आकर जयपुर का नगर निर्माण करने वाले महाराजा सवाई जयसिंह ने बृज प्रदेश में जाट राज्य भरतपुर के प्रवर्तक राजा सूरजमल को सत्ता स्थापित करने में भरपूर सहयोग दिया था। सूरजमल के पूर्वज अपने को करौली रियासत के जादौन राजपूतों के वंशज अथवा यदुवंशी मानते हैं। ये अपने मूल गांव सिनसि के पीछे सिनसिनवार क्षत्रिय हैं, ऐसी मान्यता इनमें प्रचालित है। भरतपुर, धौलपुर, आगरा, मथुरा में इनकी आबादी बहुतायत से निवास करती है। राजपूताना में भरतपुर व धौलपुर दो रियासतें थी। लोहागढ किले (भरतपुर) का शासक सूरजमल बड़ा साहसी व्यक्ति था। वह मुसलमानों के साम्राज्य के खिलाफ ताउम्र लड़ता रहा। उसने मुगल सैनिकों को भगाकर आगरा के ताजमहल में भूसा (जानवरों का चारा) भर दिया तथा ताज परिसर को जानवरों का तबेला बना दिया। अठारहवीं सदी के मध्य में उत्तर भारत में बंगाल की तरफ से अंग्रेज शक्ति हावी हो रही थी तो दूसरी ओर से नर्मदा नदी के क्षेत्र से दक्षिण से मराठे व पिण्डारी (मुसलमान) उत्तर भारत को आतंकित कर रहे थे। ठीक उसी समय पश्चिम में अफगानिस्तान से अहमद शाह दुर्रानी जो इतिहास में अहमदशाह अब्दाली के नाम से ज्यादा जाना जाता है ,ने भरतपुर मथुरा के क्षेत्र पर भारत में चौथी बार आक्रमण किया। क्रूर अब्दाली ने अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि यहां के नागरिकों का बुरी तरह से कत्ले आम किया जाए। जो मुस्लिम सैनिक हिन्दु आदमी का सिर काटकर लाएगा उसे पांच रुपए का प्रति नरमुण्ड पुरस्कार दिया जाएगा। उसके सैनिकों ने बृज के वल्लभगढ पर अर्द्ध रात्रि में सोते हुए लोगों पर आक्रमण किया। प्रातःकाल होने तक प्रत्येक मुस्लिम सैनिक अपने घोड़ों पर सवार होकर अन्य घोड़े पर लूट या कीमती सामान बांधे हुए अनेकों स्त्री-पुरुषों को बंदी बनाकर चल रहे थे। इन हिन्दु बन्दी पुरुषों के सिर पर कटे हुए लोगों के सिरों की गठरियां बंधी हुई थी। अब्दाली ने इन कटे हुए सिरमुण्ड की मीनार चुनवाई। जो लोग बन्दी बनकर आए थे उन्हें कोड़े मारे गए, पत्थर की चक्कियां पिसवाई गईं तथा अनेक यातनाएं देकर अन्त में उनके भी सिर कलम कर मिनार पर रख दिए गए। स्त्रियों को उनका गुलाम बना दिया गया। इसके उपरान्त अब्दाली मथुरा पहुंचा, यह समय वृज की प्रसिद्ध होली के त्यौहार का था। राजा सूरजमल के पुत्र जवाहर सिंह ने दस हजारी फौज के साथ अब्दाली को रोकने की भरसक कोशिश की। परन्तु उसे युद्ध में सेना का भारी नुकसान उठाना पड़ा। मथुरा नगर में प्रवेश कर दुष्ट सेना ने माताओं की छाती से दूध पीते बच्चों को छीन कर मार डाला। गायों व सन्यासियों को काट डाला गया। मंदिरों को अपवित्र किया गया। मथुरा के प्रत्येक स्त्री-पुरुष को नग्न किया गया। महिलाओं के साथ दुराचार किया गया। मथुरा वृंदावन में खून की नदियां बही जिससे यमुना नदी का पानी लाल हो गया। अब्दाली की सेना द्वारा यमुना का यही पानी पीने की वजह से फौज में हैजे की बीमारी फैल गई एवं वे मरने लगे तथा अनाज की कमी के कारण वे घोड़ों का मारकर खाने लगे थे। अन्य सैनिक विद्रोह पर उतारू थे इस कारण अहमदशाह वापिस अफगान चला गया। चार वर्ष उपरान्त अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली के मुगल बादशाह आलमगीर द्वितीय के निमंत्रण पर फिर जाट एवं मराठा शक्तियों के दबाने के लिए भारत पर आक्रमण किया। इसे रोकने के लिए जाटों एवं मराठाओं ने दिल्ली के आसपास अब्दाली का सामना किया। मराठों ने लाहोर एवं दिल्ली पर अधिकार कर लिया। मराठों ने दिल्ली के लाल किले को लूट लिया। दिवाने खास की दीवारों पर लगे चांदी के पतरे उतार लिए गए एवं उन्हें सैनिकों को दे दिया। इस घटना के बाद जाटों (सूरजमल) एवं मराठों (सदाशिव कुशा भाऊ) में दिल्ली में शासन करने की होड़ में फूट पड़ गई। यहां दिल्ली से सूरजमल रूठकर भरतपुर चला गया। मकर संक्रांति के दिन 14 जनवरी 1761 में अहमदशाह अब्दाली एवं मराठों के मध्य पानीपत (हरियाणा) की तीसरी लड़ाई लड़ी गई। 40 हजार सैनिक मारे गए। बन्दुकों एवं तोपों के गोलों से हाहाकार मच गया। मराठों के हर घर का सैनिक अथवा उसका रिश्तेदार इसमें मारा गया। मराठा सेना नायक कुशा भाऊ समेत अनेक योद्धा काम आए। युद्ध में बचे भूखे, नंगे, अपंग मराठा सैनिक भरतपुर की शरण में आए। राजा सूरजमल एवं रानी किशोरदेवी ने मराठा सैनिकों की सहायता कर उन्हें वापिस मराठों की सीमा में ग्वालियर सकुशल भेजा। 1763 में बहादुर हिन्दु शासक सूरजमल भी अफगान सामन्त सैयद मोहम्मद खां बलूच के हाथों धाखे से मारा गया। उसके शव के साथ भी दुर्व्यवहार किया गया। मराठों एवं अहमदशाह अब्दाली के मध्य लड़ी गई पानीपत की तीसरी लड़ाई विश्व की सबसे भयानक लड़ाई मानी जाती है। मराठा इसमें परिस्थितियोंवश बहादुरी से लड़ते हुए हारे जरुर मगर उनके शौर्य से क्रूर अब्दाली भारत में टिक नहीं सका।

पूर्व एवं वर्तमान छात्र नेताओं की कार्यशाला संपन्न

छात्र राजनीति नेतृत्व क्षमता को उभारने का एक महत्वपूर्ण मंच होता है। हमारे अनेक लोग अपने छात्र जीवन में छात्रों के नेता बनते हैं। छात्र संघों में पदाधिकारी बनते हैं, छात्र संगठनों में दायित्व निभाते हैं। उनमें से अनेक मुख्यधारा की राजनीति में भी सक्रिय रहते हैं और उल्लेखनीय मुकाम भी हासिल करते हैं। यह क्रम बना रहे इसलिए वर्तमान एवं पूर्व छात्र नेताओं की एक कार्यशाला श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन द्वारा माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में 10 नवम्बर को केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' जयपुर में आयोजित की गई। विवाहों एवं नगर निकाय चुनावों में व्यस्तता के बावजूद अपेक्षित संख्या में छात्र नेता इसमें शामिल हुए। आपसी परिचय के पश्चात माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने संघ का परिचय देते हुए बताया कि समाज में सत्वोन्मुखी सामाजिक भाव जागृत कर सामूहिक रूप से जीवन के लक्ष्य की ओर उन्मुख होने के लिए अभ्यास और वैराग्य का मार्ग है श्री क्षत्रिय युवक संघ। उन्होंने संघ की कार्यप्रणाली के उदाहरण देकर समझाया कि किस प्रकार संघ व्यक्तिगत जागरण को आधार बनाकर समाज जागरण में संलग्न है। फाउंडेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली ने श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन का परिचय दिया। कार्यशाला के संयोजक रामसिंह चरकड़ा ने इसकी भूमिका प्रस्तुत की। राजस्थान सरकार में केबीनेट मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास ने अपने छात्र जीवन के अनुभव सुनाते हुए कहा कि संघर्ष का जज्बा एवं जुनून ही सफलता दिलवाते हैं। उतार-चढ़ाव आते रहते हैं लेकिन बिना निराश हुए निरन्तर कर्मशीलता आवश्यक है। जो भी अवसर मिले उसका पूरा लाभ उठाएं। सबको सुनें, जाने लेकिन निर्णय अपने आपको जांच कर लें। न्यूज 18 समाचार चैनल के राजस्थान हैड श्रीपालसिंह शक्तावत ने कहा कि नेतृत्व हमारा नैसर्गिक गुण है इसलिए उसे बनाए रखें। सोशल मीडिया पर नकारात्मक बाते नहीं करें एवं गलत बात का विरोध करने से परहेज न करें। राजपूत से संसार की अपेक्षा विशिष्ट होती है इसलिए अपनी विश्वसनीयता को बनाए रखें। अंत में माननीय संघ प्रमुख श्री आशीर्वाद देते हुए कहा कि जिनको समाज को कुछ देना होता है वे अपनी परवाह नहीं किया करते, ऐसे ही थे संघ के द्वितीय संघप्रमुख पूज्य आयुवान सिंह जी, जिनके जन्म शताब्दी वर्ष के तहत आज की यह कार्यशाला आयोजित की गई है। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि दो बातें महत्वपूर्ण हैं कि दिए बिना कुछ मिलता नहीं है और किए बिना कुछ होता नहीं है। इसलिए जो भी करना चाहते हैं उसकी मांग के अनुरूप देने को तैयार रहें एवं बिना थके कर्मशील रहने का जज्बा रखें। कार्यशाला में शामिल हुए वर्तमान छात्र नेताओं को फाउंडेशन का मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया तथा रामसिंह चरकड़ा को वर्तमान व पूर्व छात्र नेताओं में सम्पर्क, सामंजस्य एवं सहयोग बढ़ाने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम करने का फाउंडेशन की ओर से दायित्व सौंपा गया।

'हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा?'

हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा, इस भाव के साथ लगातार कर्मशील रहें। यही कर्तव्य भाव है और यह भाव आता है तो फल की चिंता नहीं होती बल्कि फल का त्याग करने का भाव विकसित होता है। कर्मफल का त्याग ही सबसे बड़ा त्याग है और इस त्याग से मिलने वाला फल हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक होता है। इसलिए श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के ध्येय वाक्य 'कर्मण्येवाधि कारस्ते, मा फलेषु कदाचनम्' का अनुसरण करते हुए कर्तव्य को ही अधिकार मानकर कर्मशील रहें। केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में 2 नवम्बर को आयोजित श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की जयपुर शहर की बैठक को संबोधित करते हुए माननीय महवीर सिंह सरवड़ी ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि आप सबमें सामाजिक भाव है इसीलिए आप आए हो और यह भाव दृढ़ बने इसके लिए निरन्तर आपस में मिलते रहें। उन्होंने कहा कि पुरूषार्थी व्यक्ति को धैर्यवान भी होना चाहिए अन्यथा अनुकूल परिणामों के अभाव में उपजा आक्रोश पुरूषार्थ को गलत दिशा में भी ले जा सकता है। इसलिए परिणामों की चिंता से मुक्त होना प्रथम आवश्यकता है और इसके लिए कर्तव्य को ही अधिकार मानने का अभ्यास जारी रखें। 2 नवम्बर की शाम 6 बजे से प्रारम्भ हुई बैठक में सर्वप्रथम श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की स्थापना, कार्यप्रणाली उद्देश्यों, अब तक की यात्रा की जानकारी संयोजक यशवर्धनसिंह द्वारा दी गई। ई.डब्ल्यू.एस. आरक्षण बाबत फाउंडेशन के प्रयासों एवं इसकी शर्तें हटने तक की यात्रा की भी जानकारी दी गई। बैठक में हुए संवाद में भागीदारी निभाते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व महासचिव आदित्य प्रताप सिंह झाझड़ ने कहा कि संघ से मिले संस्कारों ने नेतृत्व क्षमता को विकसित किया। हम भी विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व कर्ताओं को पहचानें एवं उनको साथ लाकर समाज को उपयोगी बनाएं। डॉ. शिवदानसिंह ने कहा कि विभिन्न राज्यों में सेमिनार में जाने का अवसर मिलता है, राजपूत के लिए बहुत अवसर हैं बस उन्हें पहचानने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि फाउंडेशन लेने वाले व देने वाले के बीच सेतु का काम करे। उम्मेदसिंह शेखावत ने कहा कि कब क्या करना है, बच्चों को यह बताना बड़ा काम है। एडवोकेट प्रतापसिंह ने कहा कि संवैधानिक साधनों एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी के लिए प्रशिक्षण का कार्यक्रम बनना चाहिए। इनके अलावा कर्मवीरसिंह दिवराला, अभिमन्युसिंह राजावत, गोविन्दसिंह चांपावत आदि ने अपने विचार रखे। सबको आमंत्रित करने एवं व्यवस्था करने का जिम्मा श्रवणसिंह बगड़ी ने निभाया।

महाराजा सवाई जयसिंह की 332वीं जयंती मनाई

श्री राजपूत सभा जयपुर के तत्वावधान में 3 नवम्बर को प्रतिवर्ष की भांति जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह की 332वीं जयंती समारोहपूर्वक मनाई गई। समारोह को केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी, नारायण सिंह जैसलाण व संत समताराम जी नांद आदि वक्ताओं ने संबोधित किया। वक्ताओं ने महाराजा सवाई जयसिंह को दूरदर्शी, आदर्श एवं लोकप्रिय राजा बताया। कुशल सेनानायक, श्रेष्ठ नगर नियोजक, ज्योतिष विज्ञान के ज्ञाता एवं श्रेष्ठ प्रशासक के रूप में याद किया गया। केन्द्रीय मंत्री ने समाज की युवा पीढ़ी के लिए योजना बनाकर काम करने की आवश्यकता बताई एवं ईडब्ल्यूएस आरक्षण की विसंगतियों बाबत केन्द्र में बात करने का आश्वासन दिया। राज्य के मंत्री भंवरसिंह भाटी ने राजस्थान की तर्ज पर केन्द्र में भी ईडब्ल्यूएस आरक्षण की विसंगतियों दूर करने की मांग की। इस अवसर पर लक्ष्मणसिंह राठौड़, राज्य सूचना आयुक्त कीर्ति सिंह (आर.ए.एस.), शक्तिसिंह राठौड़ (आर.ए.एस.), अनिलसिंह चौहान (आर.पी.एस.), बजरंगसिंह शेखावत (आर.पी.एस.), वी.पी. सिंह तंवर (आर.पी.एस.), डॉ. विरेन्द्र पाल सिंह व डॉ. संजयसिंह शेखावत, एडवोकेट सुमन शेखावत व गजराजसिंह राजावत को समाज के आईकोन के रूप में सम्मानित किया गया। इसके अलावा अजितसिंह शेखावत, मुदितसिंह राठौड़, अरविंदसिंह शक्तावत को पत्रकारिता, राजकुमारी नाथावत, रणजीतसिंह नोशल, महेन्द्रसिंह भंवरथला, ध्रुवसिंह भरतपुर, भगवानसिंह आर.एच.जे.एस., गिरधरसिंह सिसोदिया, रविन्द्रसिंह चिण्डालिया को समाजसेवा, मगनसिंह चौहान, कैप्टन जयवीरसिंह कालीपहाड़ी, हर्षवर्धनसिंह चुण्डावत, उदयसिंह राठौड़, स्वरूपसिंह शेखावत को खेल क्षेत्र एवं अंजलि कंवर सोलंकी व माधवी शेखावत का बालिका प्रतिभा के रूप में सम्मान किया गया। इससे पूर्व 2 नवम्बर को रक्तदान शिविर आयोजन किया गया जिसमें 350 रक्तदाताओं ने रजिस्ट्रेशन करवाया। सभी रक्तदाताओं को प्रमाण-पत्र दिए गए।

बालिका छात्रावास के लिए एक करोड़ देने की घोषणा

राजपूत युवा समिति गिड़ा, क्षत्रिय नवयुवक मंडल बायतु एवं राजपूत सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में चिड़िया गांव में दीपावली स्नेहमिलन आयोजित किया गया जिसमें विशिष्ट अतिथि किशोरसिंह कानोड़ ने बाड़मेर शहर में बालिका छात्रावास के निर्माण हेतु एक करोड़ रुपए देने की घोषणा की। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रतापपुरी जी ने नशे की प्रवृति से बचने का आग्रह किया वहीं मुख्य अतिथि रावत त्रिभुवनसिंह ने युवाओं को जागरूक होकर आर्थिक आधार पर आरक्षण का अधिकतम लाभ लेने का आह्वान किया। श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के सहसंयोजक आजादसिंह शिवकर ने फाउंडेशन का परिचय दिया एवं उद्देश्यों व कार्य प्रणाली की जानकारी दी।

संपादकीय

समाज जागरण और हम

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'गीता और समाज सेवा' के अंतिम प्रकरण 'सफलता' में लिखा है कि ***'समाज में कार्य करना कर्म है और समाज जागरण उस कर्म का कर्म फल है। यदि हम समाज जागरण के लिए ही समाज में काम करते हैं तो वह सकाम कर्म हुआ। दूसरी ओर यदि हम समाज में कार्य करते हुए समाज जागरण में आसक्ति न रखें, हम कर्म की सिद्धि अथवा असिद्धि में विचलित न होकर समाज जागरण के फल का त्याग कर दें, उस फल को भगवदर्थ अर्पण कर दें तब उस समर्पण का जो फल होगा, वह समाज जागरण के फल से कहीं अच्छा होगा।'***

यह अवतरण पूज्य तनसिंह जी की इस पुस्तक के अंतिम प्रकरण का हिस्सा है, एक प्रकार से यह सांघिक साधना के अंतिम सोपानों का चित्रण है और यही वे सोपान हैं जिनके सहारे समाज कार्य साधना में रूपांतरित होकर परमेश्वर की आराधना बन जाता है और इसी स्थिति को प्राप्त करने पर ही 'सूत्र तेरा नृत्य मेरा, यंत्री तूं, मैं यंत्र तेरा' के स्वाभाविक उद्गार प्रकट होते हैं। ऐसी स्थिति में ही 'लाज है किसकी तेरी या मेरी, जीत भी किसकी मेरी या तेरी। काम भी तेरा मैं भी हूं तेरा, मैं हूं लहर तू मेरा किनारा।' की अधिकार पूर्वक अभिव्यक्ति होती है और संघ अपने साथ आने वालों को इसी तरफ खींचता रहता है। लेकिन हम तो सामान्य लोग हैं, हमारी यात्रा तो अभी उस सोपान तक नहीं पहुंची है ऐसे में हमें इस अवतरण को बार-बार पढ़ना चाहिए। इस अवतरण का पहला ही वाक्य है कि 'समाज का कार्य करना कर्म है और समाज जागरण उस कर्म का कर्म फल है।' तब प्रश्न उठता है कि क्या हम समाज का काम करते हैं? सांघिक साधना पथ की पहली शर्त है कि हम समाज का कार्य करें। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हम इस पथ के पथिक नहीं हो सकते। इसी वाक्य का अगला भाग है कि समाज जागरण उस कर्म का कर्म फल है। तो अगला प्रश्न उठता है कि क्या हम समाज का कार्य समाज जागरण के लिए करते हैं? यदि मैं समाज में समाज में कार्य करता हूं और उससे व्यक्तिगत प्रसिद्ध पाना चाहता हूं तो पात्र नहीं हूं सांघिक साधना का। यदि मैं समाज का कार्य करता हूं और उसके बल पर राजनीति करना चाहता हूं, व्यवसाय करना चाहता हूं या बड़ा आदमी बनना चाहता हूं तो भी मेरे में वह पात्रता नहीं आई है। इसलिए उस पात्रता के लिए तो मेरा समाज कार्य समाज जागरण के लिए ही होना चाहिए यह बात इस पहली पंक्ति में हमारे समझ में आती है लेकिन अगली पंक्ति में बात फिर उलझ जाती है। उसमें लिखा है कि यदि हम समाज जागरण के लिए ही समाज में काम करते हैं तो वह सकाम कर्म हुआ। अर्थात वह भी श्रेष्ठता नहीं है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने सकाम कर्मों को हेय माना है अर्थात वे श्रेष्ठ नहीं है। तो अब समाज में कार्य करना है, समाज जागरण उसका परिणाम होगा लेकिन समाज जागरण की चाह भी नहीं रखनी है, आसक्ति भी नहीं रखनी है। समाज जागरण हो या न हो इसकी चिंता नहीं करनी है बल्कि बस समाज में कार्य किए जाते रहना है, कर्तव्य समझ कर करते रहना है, मेरा यह कर्म है इसलिए करना है, इस काम को करना मेरा अधिकार है इसलिए करते जाना है। समाज जागरण होने लगे तो सफलता के श्रेय के चक्कर में विचलित नहीं होना है और समाज जागरण न भी हो तो निराशा के कारण विचलित नहीं होना है। इस अवतरण में लिखा है कि 'हम कर्म की सिद्धि अथवा असिद्धि में विचलित न होकर समाज जागरण के फल का त्याग कर दें।' अब नया प्रश्न खड़ा हुआ कि इसका त्याग कैसे करें तो इसी पंक्ति में आगे लिखा है कि 'उस फल को भगवदर्थ अर्पण कर दें' अर्थात अपने आपको अभ्यास के द्वारा इस बात के लिए तैयार करें कि फल जो भी मिले उसे परमेश्वर के चरणों में अर्पित कर दें। यदि ऐसा कर देंगे तो फल का त्याग हो जाएगा और वह फल परमेश्वर को अर्पित हो जाएगा। यही तो है 'लाज है किसकी तेरी या मेरी, जीत भी किसकी मेरी या तेरी।'

लेकिन फिर हमारा प्रश्न हो सकता है कि आखिर ऐसा क्यों करें? हमारे समाज जागरण के कर्म फल को भगवान को अर्पित क्यों करें? इससे हमें क्या फायदा? क्यों कि आज की पूरी व्यवस्था तो फायदे की गणित पर टिकी हुई है। तो इसी अवतरण में इस बाबत आगे लिखा है कि 'तब उस समर्पण का जो फल होगा, वह समाज जागरण के फल से कहीं अच्छा होगा।' अर्थात फायदे में कोई कमी नहीं होगी बल्कि जितने फायदे का अनुमान था उससे कही अधिक होगा। लेकिन होगा उसकी योजनानुसार जिसको हमने हमारा कर्म फल अर्पित कर दिया है। इस प्रकार यह अवतरण यह बताता है कि पहले तो हम समाज का काम करना प्रारम्भ करें, वह समाज का काम समाज जागरण के लिए हो, लेकिन समाज जागरण हो ही यह कामना नहीं हो, बल्कि उस कर्म के फल को भगवदर्थ अर्पण कर दें तो सिद्धि असिद्धि में विचलन नहीं होगा और उससे कहीं अधिक मिलेगा जितना हमारा अनुमान था। लेकिन यहां भी हमारा यह प्रश्न हो सकता है कि यह सैद्धांतिक बात क्या व्यवहार में संभव है? क्या इस बात को धरातल पर उतारा जा सकता है? तो इसी प्रश्न का उत्तर श्री क्षत्रिय युवक संघ है। पूज्य तनसिंह जी का पूरा दर्शन इसी प्रश्न का धरातल पर उतारा हुआ उत्तर है। यहां कर्म का अर्थ ही समाज का कार्य है और वह कार्य किसी व्यक्तिगत हित साधन के लिए नहीं बल्कि समाज जागरण के लिए ही किया जाता है इसीलिए तो सुदूर ढाणी में बैठा कोई व्यक्ति बिना इस बात की परवाह किए शाखा लगाता रहता है कि उसे कोई देख रहा है या नहीं। कोई उसे सराह रहा है या आलोचना कर रहा है इसकी चिंता भी वह नहीं करता। हालांकि वह भी इस पथ का पथिक ही है, अभी पहुंचा नहीं है इसलिए उसे भी सराहना सुहाती है, आलोचना बुरी लगती है लेकिन यह आलोचना या सराहना उसमें पथ से विचलन पैदा नहीं करती। क्योंकि वह मानता है कि यह उसका काम है जो उसे ही करना है और वह नहीं करेगा तो कौन करेगा? और करते-करते ऐसे अनेक लोग तैयार हुए हैं जो इस बात की भी चिंता नहीं करते कि उनके कर्म से समाज जागरण हुआ या नहीं हुआ अथवा अब तक कितना हुआ है? इसीलिए तो सांघिक पथ के पथिक लोगों के इस प्रश्न से विचलित नहीं होते कि संघ ने अब तक 73 वर्ष में क्या कर लिया क्यों कि वे पथिक लोगों के इस प्रश्न का उत्तर बनने के लिए नहीं बल्कि संघ के इस निर्देश का पालन करने के लिए काम करते हैं कि यह काम ही हमारा अधिकार है और हमें तो यह काम ही करते जाना है, अपेक्षित समाज जागरण होता है या उससे अधिक या कम होता है यह हमारे अधिकार क्षेत्र से बाहर है। संघ का पूरा प्रशिक्षण इसी भाव का अभ्यास है और यही अभ्यास कर्म फल को भगवदर्थ अर्पण करने की भूमिका तैयार करता है जो हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक फल मिलने की आधार भूमि बनता है। हम तो परमेश्वर से यही प्रार्थना करें कि वे हमें इस पथ पर आरुढ़ करें, यदि आरुढ़ कर दिया हो तो बनाए रखें, शेष कभी सोपान तो यह पथ स्वतः सिद्ध करता जाएगा क्यों कि यह इस पथ की विशेषता है और ऐसा इस पथ पर आगे चल रहे पथिकों का अनुभव है।

खरी-खरी

नारी अस्मिता का प्रश्न

आज चारों ओर नारी अस्मिता का प्रश्न खड़ा हुआ है। रोज समाचार माध्यमों में नारी की अस्मिता के हनन के समाचार प्रसारित होते हैं। ऐसी-ऐसी घटनाएं घटित हो रही हैं कि भारत की भारतीयता तार-तार होती नजर आती है। आखिर यह सब क्यों हो रहा है? नारी की पूजा करने वाला भारत ऐसा कैसे हो गया? नारी की अस्मिता के लिए समुद्र पर सेतु बांधकर रावण के खानदान को नेस्तनाबूत करने वाली परम्परा क्या कुंद तो गई है या नारी की अस्मिता के लिए अठारह अक्षौहिणी सेना का संहार सहने वाला भारत क्या आज अपने आपको भूल गया है? आखिर यह हो कैसे गया? नारी अस्मिता हमारे जीवन मूल्यों में अपनी प्रतिष्ठा क्यों नहीं बनाकर रख पा रही है? क्या हमारे जीवन मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं? क्या यह वही देश है जहां नारी अपनी अस्मिता को बचाने के लिए अग्नि स्नान कर लिया करती थी? क्या यह वही देश है जहां किसी विधर्मी की अपने शरीर पर छाया पड़ने पर भी नारी अपना आत्मोत्सर्ग कर लिया करती थी, तो फिर आखिर आज क्या हो गया? हमारी परम्परा में नारी ने अपने पति, अपने पुत्र, अपने परिवार, अपने राज्य, अपनी जमीन, अपने संगे संबंधियों आदि सब पर अपनी अस्मिता को प्राथमिकता दी। उसने परमेश्वर द्वारा प्रदत्त अपने मूल्यवान जीवन को भी अपनी अस्मिता के समक्ष तुच्छ पाया। केवल नारी ने ही नहीं बल्कि पुरुष ने भी उसकी अस्मिता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने में तनिक भी विलंब नहीं किया। यदि मध्यकालीन भारत के इतिहास को देखें तो नारी अस्मिता सर्वोच्च जीवन मूल्य एवं मानबिन्दु का स्थान पा चुका था इसीलिए तो जौहर जैसे अनुपम उदाहरण संसार में केवल भारतीय मध्यकालीन इतिहास में पाए जाते हैं। तब प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जीवन मूल्यों में इतना उच्च स्थान पा चुकी नारी अस्मिता आखिर इस निचले पायदान पर क्यों पहुंच गई? क्या हमारे जीवन व्यवहार या जीवन दर्शन में कोई परिवर्तन आ गया है जो नारी अस्मिता के लिए महाभारत जैसे भयंकर युद्ध को भी स्वीकार करने वाला भारत आज ऐसे कुत्सित उदाहरणों का भी साक्षी बन रहा है? उत्तर ढूंढने जाएंगे तो निश्चित रूप से हां में ही आएगा। हमारे जीवन दर्शन को प्रभावित करने वाले मूल्यों में हम नारी अस्मिता को निचले स्तर पर ले आए हैं। वर्षों पहले हमारे यहां एक फिल्म बनी थी 'मदर इंडिया'। ऐसी फिल्म जिसे बहुत सराहा गया था। अपने गांव की लड़की की अस्मत की रक्षा के लिए भारत की माता अपने पुत्र की हत्या करने में भी नहीं हिचकती। यह उस फिल्म में बताया गया लेकिन उसी फिल्म में हमें देखने को मिलता है कि वहीं मां अपने बच्चों की भूख के आगे अपनी अस्मिता का सौदा करने को तैयार हो जाती है अर्थात् ममता अस्मिता पर भारी पड़ जाती है। भावना कर्तव्य पर विजय पाने को तत्पर होती है। यही क्षरण है जीवन मूल्यों का। यही से नारी अस्मिता उच्चतम शिखर से नीचे के पायदान पर खिसकनी प्रारम्भ होती है। विगत दिनों भी एक विवादास्पद फिल्म बहुत अधिक चर्चा का विषय बनी थी। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	तीन दिवसीय प्र.शि. बालक	31.11.2019 से 02.12.2019 तक	**जड़िया**, तहसील धानेरा, बनासकांठा। धानेरा से 10 किमी. दूर।
02.	चार दिवसीय प्र.शि. बालिका	22.12.2019 से 25.12.2019 तक	**पिपलिया मंडी**, मंदसौर (मध्यप्रदेश)। (नेचुरल पब्लिक स्कूल) **सम्पर्क सूत्र :** 9926685051, 7000207921 8085207733
03.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	22.12.2019 से 25.12.2019 तक	जीएसएम स्कूल, **महागढ़**, नीमच (मध्यप्रदेश)। **सम्पर्क सूत्र :** 9425974693, 8349912938
04.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	26.12.2019 से 29.12.2019 तक	आशापुरा माता मंदिर, **गैलाना**। तहसील सुवासरा मंदसौर (मध्यप्रदेश) **सम्पर्क सूत्र :** 9977800497, 9926738399, 9754218326
05.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	भोजराजसिंह की ढाणी, **जैसलमेर** रामगढ़ जैसलमेर मार्ग पर स्थित।
06.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	**सिरसला,** नागौर।
07.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	**भादला** (बीकानेर)। नोखा के लखारा चौराहे व बीकानेर के गंगानगर चौराहे से बस।
08.	दंपती शिविर 35 वर्ष तक की दंपती हेतु	02.01.2020 से 05.01.2020 तक	आलोक आश्रम, **बाड़मेर**।
09.	दंपती शिविर 35-50 वर्ष तक की दंपत्ती हेतु।	09.01.2020 से 12.01.2020 तक	आलोक आश्रम, **बाड़मेर**

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

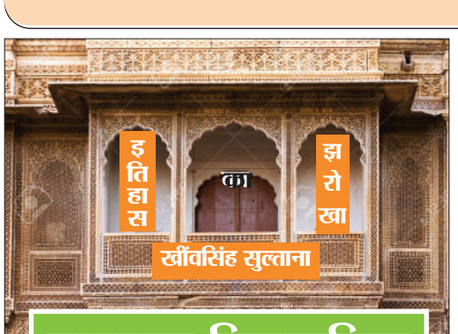

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य समुद्रगुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य का शासक बना। समुद्रगुप्त के अनेक पुत्रों में से चन्द्रगुप्त योग्यतम था, जिसे समुद्रगुप्त ने अपना उत्तराधिकारी बनाया। चन्द्रगुप्त के बारे में जानकारी उसके अभिलेखों, चीनी यात्री फाहियान के यात्रा वृत्तान्त, चन्द्रगुप्त के समकालीन विद्वानों की साहित्य रचनाओं से, उसके सिक्कों से मिलती है। समुद्रगुप्त के बाद 375 ई. में चन्द्रगुप्त शासक बना। चन्द्रगुप्त का विवाह नागवंशीय कुबेरनागा के साथ हुआ जिससे एक पुत्री प्रभावती गुप्ता हुई जिसका विवाह दक्षिण भारत की एक प्रमुख शक्ति वाकाटक वंश के राजकुमार रूद्रसेन द्वितीय के साथ किया, वहीं पुत्र कुमार गुप्त का विवाह भी दक्षिण के एक प्रमुख राजवंश कदम्ब राजवंश में किया। वैवाहिक संबंधों द्वारा अपनी स्थिति सुदृढ़ कर लेने के पश्चात चन्द्रगुप्त ने अपना विजय अभियान प्रारम्भ किया जिसका उद्देश्य उदयागिरी शुहाभिलेख के अनुसार 'कृत्स्नपृथ्वीजय' (सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतना) था। चन्द्रगुप्त भी अपने पिता की भांति एक कुशल यौद्धा और सेनापति था। अपने विजय अभियान का प्रारम्भ उसने पश्चिमी भारत के शकों की शक्ति का उन्मूलन करके किया। समुद्रगुप्त के समय यद्यपि शकों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। परन्तु बाद में उन्होंने अपनी शक्ति को अत्यधिक बढ़ा लिया था और गुप्त साम्राज्य के लिए संकट उत्पन्न कर रहे थे। शकों के विरुद्ध इस अभियान में चन्द्रगुप्त अपने प्रमुख सेनापति आभ्रकादेव के साथ गया था। शकों के साथ यह युद्ध कई चरणों में लम्बा चला। अंत में शक शासक रूद्रसिंह तृतीय मारा गया और शकों की शक्ति को पूर्णतया नष्ट कर चन्द्रगुप्त ने उनके राज्य को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। शको पर चन्द्रगुप्त की विजयी उसकी महान उपलब्धि थी। तीन शताब्दियों से पश्चिम भारत पर आधिपत्य जमा कर रखने वाली विदेशी शक्ति को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया गया। शकों पर इस विजय के बाद चन्द्रगुप्त ने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

बेमला में अन्नकूट कार्यक्रम : बेमला गांव के सभी करणोत बंधुओं ने लक्ष्मीनारायण जी मंदिर में अन्नकूट कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें युवाओं एवं बुजुर्गों की समान भागीदारी रही। माताएं, बहिनें भी कार्यक्रम में शामिल हुईं। सभी ने गांव में शीघ्र ही दुर्गादासजी की मूर्ति स्थापित करने का निर्णय लिया।

आवश्यकता

मैंगलोर कर्नाटक में इलेक्ट्रिक केबल होलसेल व्यापार के लिए निम्न पदों पर मेहनती, ईमानदार व अनुभवी युवकों की आवश्यकता है।

➡ सेल्स मैनेजर (वेतन 12000 प्रतिमाह)
➡ हेल्पर (वेतन 8000 प्रतिमाह)
➡ ड्राईवर (वेतन 10000 प्रतिमाह)
➡ रहना, खाना व दवाई फ्री एवं वर्ष में दो माह का अवकाश

राघवेन्द्रसिंह 9742011431, 9828381431

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय साथी **मूलसिंह बेतीणा** के *पुलिस इंस्पेक्टर* पद पर पदोन्नत होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : **नरपतसिंह बस्तवा**

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल

Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

पन्द्रह दिन में आठ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

(पृष्ठ एक से लगातार) शिविर के दौरान ही धानेरा शहर में रहने वाले क्षत्रिय परिवारों का एक स्नेहमिलन रोयल स्कूल धानेरा मे माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में रखा गया। बनासकांठा प्रान्त के अंतर्गत ही एक सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 30 अक्टूबर से 05 नवंबर तक आर सी मेहता उत्तर बुनियादी विद्यालय, नारोली में आयोजित हुआ। शिविर में पलवाड़ा, पांची, आँबली, चाँदिसरा, मीठड़ी, जगन्नाथपुरा, मोटासडा, ढीमा, उखरला, लवारा, भेसाणा, कमाणा, पांचला, धुड़िला, फरेदपुर, वलादर, नारोली, जाडी, लोरवाड़ा, मूली, अवाणिया, शिहोरी, चारड़ा, सोनु, पछेगाम, पीपलून, नालोदर, सेतरावा, आकोली, नंदाली, सलेउ, सारन्डा, आलासण, लोहिडी, पीलुड़ा, रामसन, काणेटी, सारणी, धोलेरा, सुरावा, खांडी, करड़ा, धोता, बाड़मेर, मोरचंद, कोरना, मीठोड़ा, सुगेरिया, चेलक, पडेल, सकलाणा, चिभडा, माडका, जड़िया, पीपण, लुणोल, मलेकवदर, गोला, गड़ा, वासकोल, देणोक, कुकणवाली, मालूंगा, मेसरा, दोलतपुरा, सिधाव, थलसर, दुजार, कुकराणा आदि गाँवो के 185 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन माननीय संघप्रमुख श्री के निर्देशन में संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेन्यांकाबास ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि हमें आज अपने स्वरूप को पहचानने की आवश्यकता है, अपनी शक्तियों को, अपने उत्तरदायित्व को और अपने स्वधर्म को पहचानने की आवश्यकता है। इस पहचान से ही हमारा जीवन अर्थ पायेगा और जीवन को सार्थक करने का यह मार्ग संघ हमें दिखा रहा है। अरविंदसिंह नारोली, भगवानसिंह वलादर, हीरसिंह जाड़ी तथा अजीतसिंह कुणघेर ने व्यवस्था का जिम्मा सम्भाला। गुजरात में ही अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत के कानेटी गांव में भी एक शिविर 10 से 12 नवम्बर तक आयोजित हुआ। शिविर में कानेटी, खोड़ा, चेखला, पिंपन, मौरिया, साणंद, पलवाड़ा, मेघाणी नगर, मोडासर आदि स्थानों से 85 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए दिग्विजयसिंह पलवाड़ा ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ ईश्वरीय मार्ग है। ईश्वर की कृपा से ही हमको यहाँ आने का अवसर मिला है। इस कृपा को समझकर निष्ठा पूर्वक संघमार्ग पर चलकर हम अपने जीवन लक्ष्य को सहज ही प्राप्त कर सकते हैं। व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से परमेष्टि तक की यह यात्रा है, आवश्यकता केवल हमारे चलने की है। व्यवस्था का दायित्व कानेटी मंडल ने संभाला। जैसलमेर संभाग के रामगढ़ प्रान्त के अन्तर्गत पनराजसर मन्दिर के प्रांगण में 30 अक्टूबर से 02 नवम्बर तक बालिकाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में देवलिया (अजमेर), सोंईतरा (जोधपुर), अवाय, जोगा, रामगढ़, सोनू, पारेवर, पूनमनगर, सेऊवा, अजुर्ना, राघवा, जोगीदास गांव, तेजपाला, मोकला, लौद्रवा, जोधा, नेतसी, सगरां, सत्याया, डेलासर, मुलाना, मेगा आदि गांवों की 101 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए रीटा कंवर देवलिया ने बालिकाओं से कहा कि शिविर में आपने जो प्रशिक्षण प्राप्त किया है उसको अपने जीवन में ढालना है और अन्यों को भी प्रेरित करना है। हमारा उज्ज्वल चरित्र ही परिवार, समाज और राष्ट्र के गौरव की आधारशिला है। त्याग और तपस्या की जिस राह को हमारी कौम भूल गई है उसी पर हमें पुनः चलायमान करने का कार्य संघ कर रहा है। पदम सिंह रामगढ़, बाबू सिंह बेरसीयाला, सांवलसिंह मोढ़ा, चनण सिंह म्याजलार, चनण सिंह सेऊवा तथा पनराजसर सेवा समिति के सदस्यों ने व्यवस्था का जिम्मा सम्भाला। शेखावाटी प्रान्त में भी एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर ग्राम बरसिंहपुरा में 01 से 04 नवंबर तक आयोजित हुआ जिसमें बरसिंहपुरा, गुढ़ा कला, रायपुरा, किशनपुरा, फुलेरा, ढुढिया, महरौली, सिंघाना, भगतपुरा, पलसाना आदि गांवों के 110 बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन घीसू सिंह कासली ने किया। उन्होंने शिविर में उपस्थित युवाओं से कहा कि क्षत्रिय का जीवन अपने लिए नहीं अपितु समस्त संसार के लिए होता है। हमें भी इस बात को समझकर अपनी संकुचितता को त्यागना होगा। संघ हमारे अपनत्व के दायरे को बढ़ाकर हमें क्षत्रिय बनाने का कार्य कर रहा है। इस कार्य का महत्व समझकर हम भी इसमें सहयोगी बनें, इसी में हमारा और संसार का कल्याण निहित है। शिविर के समापन के पश्चात आयोजित कार्यक्रम में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के संयोजक यशवर्धन सिंह झेरली ने युवाओं को कैरियर सम्बन्धी मार्गदर्शन दिया, आरटीआई के लाभ बताएं और साथ ही उनकी ईडब्ल्यूएस संबंधी जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यक्रम के दौरान गोविंद सिंह, बजरंग सिंह, रतन सिंह, लाल सिंह, कैलाश सिंह, मूल सिंह, रूप सिंह पलसाना, राजेन्द्र सिंह पलसाना, भागीरथ सिंह महरौली, मंगल सिंह शिस्यू, चतर सिंह शिस्यू, विक्रम सिंह किशनपुरा, बजरंग सिंह पलसाना सहित अनेक युवा उपस्थित रहे। नागौर संभाग के लाडनूं प्रांत में हुडास गांव के प्रांगण में 29 अक्टूबर से 01 नवंबर तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में हुडास, छापड़ा, गुगरियाली, ढींगसरी, रताऊ, खाबड़ियाना, मणु, खोखरी, खारी जोधा, धुडिला, हीरावती, झरडिया, मगरासर आदि गांवों के युवा सम्मिलित रहे। शिविर का संचालन करते हुए विक्रम सिंह ढींगसरी ने कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी ने हमें संघ रूपी अनुपम धरोहर प्रदान की है। हमें जागृत रहकर इसको संभालना है। लापरवाही में, असावधानी में हमसे यह अनूठी धरोहर कहीं खो न जाय। कष्टों को प्रसन्नचित्त होकर स्वीकार करें, अभावों में, संघर्षों में भी उत्साह पूर्वक लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें, यही साधना है। रामस्वरूपसिंह, शेर सिंह वकील, कालुसिंह पूर्व सरपंच, महावीर सिंह, विजेन्द्र सिंह आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। इसी प्रकार एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर चित्तौड़गढ़ जिले की निम्बाहेड़ा तहसील के अंतर्गत आने वाले गांव कोटड़ी खुर्द में 31 अक्टूबर से 03 नवंबर तक संपन्न हुआ। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी गंगा सिंह जी साजियाली ने शिविर का संचालन करते हुए उपस्थित स्वयंसेवकों से कहा कि सत्य और धर्म की राह सदैव कठिन होती है किंतु सद्पुरुषों के लिए यही मार्ग वरणीय है। प्रत्येक युग में महापुरुषों ने इस कठिन मार्ग को चुनकर, उस पर चलकर समाज को दिशादर्शन प्रदान किया है। पूज्य श्री तनसिंह जी भी ऐसे ही महापुरुष है जिन्होंने हमारे समाज को अपनी भूली हुई पहचान याद दिलाई। शिविर में कोटड़ी खुर्द, नारेला, आकोला गढ़ (सभी चित्तौडगढ़), निम्बाहेड़ा कलां, बड़ला(सभी भीलवाड़ा), बरखेड़ा, ईशभ खेडी, गुजर खेडी सान्खला, चेन पुरा (सभी मध्यप्रदेश) से शिविरार्थी सम्मिलित हुए। शिविर व्यवस्था में नारायण सिंह कोटड़ी खुर्द, पप्पू सिंह कोटड़ी खुर्द, मोहन सिंह कोटड़ी खुर्द, लक्ष्मण सिंह बडौली, माधो सिंह, गोपाल शरण सिंह सहाड़ा ने सहयोग किया। मेवाड़-वागड़ संभाग के बांसवाड़ा प्रान्त में भी एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 09 से 12 नवंबर तक सम्पन्न हुआ। प्रतापगढ़ में श्री वनदेवी नर्सरी में आयोजित इस शिविर में चिकलाड़, सेलारपुरा, देवद, कुलथाना, झालो का खेडा, रिछावरा, झासडी, कुणी, सागोट, वणवासा आदि गांवों के युवा सम्मिलित हुए। शिविर का संचालन संभाग प्रमुख भँवर सिंह बेमला ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से शिविर में मिले ज्ञान को आचरण में ढालने की बात कही तथा अभ्यास को दृढ़ करने के लिए बार-बार शिविर व शाखा में आने के लिए कहा। व्यवस्था में लक्ष्मण सिंह चिकलाड़, कुबेर सिंह सेलारपुरा, रघुनाथ सिंह चिकलाड़, दिग्विजय सिंह चिकलाड़, तेजपाल सिंह अम्बावली, आनंद सिंह कुणी, कमल सिंह लालपुरा, समन्दर सिंह झालो का खेडा आदि समाजबंधुओं ने सहयोग किया।

कच्छ में प्रतिभा सम्मान समारोह

कच्छ जिला राजपूत क्षत्रिय सभा द्वारा जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान तथा दीपावली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन 3 नवंबर को प्रातः 10:30 बजे भुज शहर में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंचस्थ महानुभावों के द्वारा आदि शक्ति मां आशापुरा की छवि के समक्ष दीप प्रागट्य कर किया गया। समारोह में उपस्थित आगंतुकों का शाब्दिक स्वागत अजयपाल सिंह आडेसर ने किया। समारोह को कच्छ इतिहास परिषद के प्रमुख सावजसिंह जाड़ेजा, क्षत्रिय सभा के पूर्व प्रमुख जोरावर सिंह राठौड़, नारायण सिंह जाड़ेजा, अबड़ासा विधानसभा से विधायक प्रद्युम्न सिंह जाड़ेजा एवं कच्छ क्षत्रिय सभा के प्रमुख मांडवी से विधायक वीरेंद्र सिंह जाड़ेजा ने संबोधित करते हुए वर्तमान समय में शिक्षा, सामाजिक एकता ,आर्थिक संपन्नता एवं राजनीतिक चेतना जागृत करने की बात रखी। समारोह में कक्षा दसवीं से कॉलेज तक के श्रेष्ठ विद्यार्थियों एवं जिला स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को मोमेंटो एवं इनाम देकर प्रोत्साहित किया गया। गुजरात राजपूत युवा संघ द्वारा आयोजित भूचर मोरी शहीद श्रद्धांजलि समारोह में गिनीज बुक में वर्ल्ड रिकोर्ड के रूप में दर्ज होने वाले तलवार रास कार्यक्रम में भाग लेने वाली कच्छ की क्षत्राणियों को मोमेंटो,तलवार एवं पारितोषिक देकर विशेष सम्मानित किया गया। समारोह में उपस्थित समस्त जनसमूह की सर्वसम्मति से कच्छ जिला राजपूत क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष के रूप में वीरेंद्र सिंह जाड़ेजा एवं कच्छ जिला राजपूत क्षत्रिय युवा सभा के अध्यक्ष के रुप में हठूभा जाड़ेजा लोरिया को पुनः 3 वर्षों के लिए मनोनीत किया गया। समारोह में कच्छ क्षत्रिय महिला सभा की अध्यक्षा चेतना बा जाड़ेजा के नेतृत्व में सैकड़ों क्षत्राणियों के साथ साथ कच्छ के गांव गांव से सैकड़ों की संख्या में क्षत्रियों की उपस्थिति ने समारोह की शोभा बढ़ाई। समारोह के अंत में उपस्थित आगन्तुकों ने सामूहिक भोजन का आनंद लिया। समारोह के आयोजन को सफल बनाने के लिए कच्छ जिला राजपूत क्षत्रिय युवा सभा की टीम के युवाओं ने बखूबी जिमेदारी निभाई । समारोह का सफल संचालन मनु भा जाडेजा ने किया।

परबतसर में दीपावली स्नेहमिलन

श्रीचारभुजा सेवा संस्थान परबतसर के तत्वावधान में 3 नवम्बर को परबतसर में दीपावली स्नेहमिलन आयोजित किया गया। स्नेहमिलन में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने सामाजिक संस्थाओं द्वारा युवाओं के रोजगार संबंधी कार्यों के लिए विशेष प्रयास का आह्वान किया। उन्होंने अनेक उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार से एक दो लोगों के संकल्प ने अपना शत-प्रतिशत देते हुए समाज के लिए इस क्षेत्र में बड़ा काम किया है। साथ ही उन्होंने अपने विभाग की योजनाओं की भी जानकारी दी। श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह ने सर्वप्रथम आर्थिक आधार पर आरक्षण में विषय को लोकसभा में उठाकर केन्द्र सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करने के लिए केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत का आभार व्यस्त किया एवं साथ ही माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देशन में ई.डब्ल्यू.एस. की शर्तों को हटाने के लिए श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के अभियान की जानकारी दी। उन्होंने मुख्यमंत्री जी द्वारा इस विषय पर लिए गए निर्णय के लिए राज्य सरकार का भी आभार जताया। पूर्व विधायक मानसिंह किनसरिया ने केन्द्रीय मंत्री से निवेदन किया कि ई.डब्ल्यू.एस. की शर्तों में केन्द्रीय स्तर पर भी संशोधन करवाया जाए। संस्थान के सचिव हिम्मतसिंह गिगोली ने संस्थान का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं संस्थान के अध्यक्ष महेशपालसिंह बडु ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के कार्यों व योजना की जानकारी दी। कार्यक्रम को विनोदसिंह लिचाणा, विक्रमसिंह टापरवाड़ा, राकेशकुमार सिंह, मातादीनसिंह कालवा आदि ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षाविद् गोरधनसिंह खोखर ने किया। कार्यक्रम में वयोवृद्ध समाजसेवी प्रहलादसिंह पीह का सम्मान किया गया। उनके साथ-साथ संस्थान में सहयोग करने वाले भामाशाहों, सरकारी सेवाओं में चयनित लोगों एवं प्रतिभावान विद्यार्थियों का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के संरक्षक किशोरसिंह राबड़ियावास, दलपतसिंह रुणिचा, पूर्व अध्यक्ष मोहनसिंह श्यामपुरा सहित सैंकड़ों लोग शामिल हुए।

(पृष्ठ एक का शेष)

मैं अपना..

बार-बार परिणाम पर नजर नहीं डालें नहीं तो नजर परिणाम पर रहेगी, और कर्म से हट जाएगी। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि जीवन को सार्थक करने के लिए दो बातों का विशेष ध्यान रखना है कि क्या करने जैसा है और क्या नहीं करने जैसा है। जो करने जैसा है उससे हम चूके नहीं और जो नहीं करने जैसा है उसमें हम प्रवृत्त न हों। हम किसी को कष्ट देने के लिए नहीं, कष्ट निवारण के लिए संसार में आए हैं इसलिए हमारे कारण किसी को कष्ट न हो। जीवन में किसी प्रकार का पाखंड न हो, सत्याचरण हो, मिथ्याचरण न हो। हमें ईश्वर की ओर बढ़ना है तो छोटी-छोटी बातों के लिए रुकना नहीं है, बड़ा काम करना है। अपना अध्ययन करते रहें कि क्या खोया है, क्या पाया है? क्या पाना है और क्या खोना है? भगवान से अनुमति लेकर भगवान को दृष्टि में रखकर, भगवान को अर्पित करके कर्म करें और परिणामों की चिंता न करें तो भगवान हमारी परवाह करेगा। हमारा जीवन भगवान का क्रीड़ांगन बने यह प्रार्थना पूरे शिविर में हमने की है। शिविर से विदा करते समय मैं आपके लिए शाश्वत सुख की कामना करता हूं। श्री क्षत्रिय युवक संघ का शुभाषीष लेकर जाएं और इस दीपक को लेकर जाएं आपको चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देगा।

सरकारी योजनाओं...

मैं केन्द्र सरकार से भी अपील करता हूं कि वे भी राजस्थान मॉडल लागू करें। आभार प्रकट करने के लिए झुंझुनूं, सीकर, जयपुर, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, जालोर, सिरोही, पाली आदि जिलों से फाउंडेशन के सहयोगी पहुंचे। जयपुर में रहने वाले विभिन्न जिलों के लोग भी इस अवसर पर पहुंचे एवं मुख्यमंत्री आवास पर लगा डोम पूरा भर गया। सभी सहयोगी पहले स्व. भैरोसिंह जी के परिवार को आवंटित बंगले पर एकत्र हुए एवं वहां से समूह में मुख्यमंत्री आवास पहुंचे। सबकी तरफ से फाउंडेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह ने आभार जताते हुए निवेदन किया कि इन अव्यवहारिक शर्तों के हटाने के बाद विगत 20 वर्षों से आरक्षण की लड़ाई लड़ रहा समाज यह महसूस करता है कि आज वह इस लड़ाई का महत्वपूर्ण पड़ाव पार कर चुका है इसीलिए स्वाभाविक रूप से आभार प्रकट करने आ रहा है। साथ ही उन्होंने इस बात के लिए आभार जताया कि फाउंडेशन द्वारा विगत 8 माह से इस बाबत संवैधानिक तरीकों से चलाए जा रहे शांतिपूर्ण अभियान पर मुख्यमंत्री जी ने संज्ञान लेकर समाज में संदेश दिया है कि उग्र आंदोलनों की अपेक्षा विनयपूर्वक संवैधानिक तरीकों पर भी सरकार संज्ञान लेती है। इससे अन्य लोग भी इसी तरीके से काम करने को प्रेरित होंगे। सरकार एवं समाज के बीच इस मुद्दे पर महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य कर सरकार को यह निर्णय करने के लिए प्रेरित करने वाले धर्मेन्द्रसिंह राठौड़ भी इस अवसर पर उपस्थित रहे एवं माननीय मुख्यमंत्री जी का आभार जताया।

राजस्थान राजपूत परिषद चैन्नई का दीपावली स्नेहमिलन

चैन्नई में निवासरस राजस्थानी राजपूतों की संस्था राजस्थान राजपूत परिषद चैन्नई का दीपावली स्नेहमिलन 3 नवम्बर को संपन्न हुआ। स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार श्रवणसिंह दासपां ने कहा कि वर्तमान काल का हथियार कलम है। इसलिए हमारे बच्चों को शिक्षित कर उनका सर्वांगीण विकास करना चाहिए। बाड़मेर से कार्यक्रम में पहुंचे रघुवीरसिंह तामलोर ने अपनी सांस्कृतिक विरासत को संभाल कर रखते हुए आगे बढ़ने की बात कही। परिषद के अध्यक्ष अचलसिंह भायल ने समाज में एकता बनाकर आगे बढ़ने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम में दसवीं व बारहवीं कक्षा के प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। सुरेन्द्रसिंह देवड़ा व भूपेन्द्रसिंह देवड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं संस्था के सचिव गणपतसिंह राखी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

शाखाओं में दीपोत्सव

दीपावली के अवसर पर विभिन्न शाखाओं में दीपोत्सव एवं दीपावली स्नेहमिलन रखे गए। शेरगढ़ प्रांत की मां कालका शाखा जेठाणिया की इस अवसर पर शुरुआत की गई। ओसियां प्रांत की मेहोजी शाखा मेंफा (बापिणी) के तीन वर्ष पूर्ण होने पर 30 अक्टूबर को दीपोत्सव का आयोजन किया गया। सेखाला शाखा में पूज्य तनसिंह जी की तस्वीर पर माल्यार्पण, पुष्पार्पण एवं दीप प्रज्ज्वल कर दीपोत्सव मनाया गया। दुबई स्थित शाखा स्थल पर पूज्य तनसिंह जी का स्मरण कर दीपोत्सव आयोजित किया गया। चौहटन प्रांत के गंगासरा में शाखा मैदान में दीपावली स्नेहमिलन आयोजित किया गया जिसमें कालूसिंह गंगासरा ने संघ का परिचय देते हुए पूज्य तनसिंह जी द्वारा बताए मार्ग का अनुसरण करने का आह्वान किया। सामाजिक रूढ़ियों के प्रति जागृत हो समय के साथ अद्यतन होने की बात की गई। बापिणी स्थित मेहफां शाखा में आसपास की सभी शाखाओं का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें संभाग प्रमुख चन्द्रवीरसिंह देणोक ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी द्वारा बनाया गया मार्ग अब राजमार्ग बन चुका है, उस पर चलकर हम जीवन के गंतव्य की ओर आसानी से गतिमान हो सकते हैं। कार्यक्रम को शेरगढ़ प्रांत प्रमुख भैरोसिंह बेलवा, नरपतसिंह बस्तवा, मेहफा शाखा प्रमुख भैरूसिंह, नखतसिंह बेदु ने भी संबोधित किया।

मूलाना में पीर पिथोरा जी का मेला

जैसलमेर जिले के मूलाना के निकट स्थित सोढों का बास में जन-जन के आराध्य पीर पिथोराजी का मेला 30 अक्टूबर को संपन्न हुआ। भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें बड़ोडागांव, दवाड़ा, कीता, फतेहगढ़, बिशाला, मिठड़ाऊ आदि स्थानों से सैंकड़ों श्रद्धालु पहुंचे। उल्लेखनीय है कि पीर पिथोरा जी सोढ़ा राजपूत थे और उनका मूल स्थान पाकिस्तान के सिंध प्रांत का अकड़ी गांव है। वहां उन्होंने अपने तपोबल की सहायता से आततीय विधर्मियों से स्थानीय लोगों की रक्षा की। उन्होंने लोगों में स्वधर्म के प्रति मान्यता बढ़ाई एवं उनके स्वाभिमान को जगाया। 1971 के युद्ध के पश्चात उनके वंशज जैसलमेर के विभिन्न गांवों में बस गए। उन्हीं लोगों ने मूलाना गांव की दक्षिण दिशा में मंदिर बनवाया जहां प्रतिवर्ष कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीय को दो दिवसीय मेला भरता है।

सांचौर में प्रतिभा सम्मान समारोह

प्रतिवर्ष की भांति राव बल्लूजी छात्रावास सांचौर में प्रतिभा सम्मान समारोह 30 अक्टूबर को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 60 प्रतिभाओं को प्रशस्ति पत्र एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। समारोह को विधायक नारायणसिंह देवल, पूर्व मंत्री अर्जुनसिंह देवड़ा, राव मोहन सिंह चितलवाना, हिन्दूसिंह दूढवा, महावीरसिंह दातिया, चन्दनसिंह विरोल, प्रियंका कंवर खारा, हिम्मत कंवर कारोला आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने परम्परागत संस्कारों के सींचन, बुजुर्गों का सानिध्य प्राप्त करने, शिक्षा, नशा मुक्ति, व्यापार, आधुनिक खेती आदि विषयों पर अपनी बात कही। समारोह के पश्चात् स्नेहभोज का आयोजन किया गया।

(पृष्ठ चार का शेष)

नारी अस्मित... इतिहास को आधार पर बनी फिल्म में इतिहास को ही विकृत करने का प्रयास किया गया। हालांकि उस फिल्म में राजपूत चरित्र को ढंग से दिखाया गया लेकिन यह भी दिखाया गया कि किस प्रकार एक क्षत्राणी अपने पति को छुड़ाने के लिए दुश्मन के घर जाने को तैयार होती है और इसे साहस के रूप में महिमामंडित भी किया गया जबकि इतिहास में ऐसा कुछ भी नहीं है। इतिहास का उज्ज्वल पक्ष ही यही है कि हमारे यहां नारी अस्मिता नारी के लिए प्रथम कर्तव्य माना गया था और उस कर्तव्य के समक्ष शेष सभी भावनात्मक रिश्ते गौण माने गए। इसीलिए राज्य, पिता, पुत्र, पति, परिवार आदि उसके लिए अपनी अस्मिता से सदैव कम महत्व रखते थे और केवल नारी के लिए ही नहीं बल्कि पुरुष वर्ग के लिए भी यह सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक थी इसलिए तो कहा गया -

धरा जातां धरम पलटता, त्रियां पड़ता ताव।
एं तीनहुं दिन मरण रा, कांई रंक कांई राव।।

लेकिन बुद्धि के नाप तौल से यह बात समझ में नहीं आती और दुर्भाग्य से पश्चिम के सम्पर्क के बाद पनपा भारत का बुद्धिवादी वर्ग बुद्धि से परे जाने में गरीब ही रहा इसीलिए तो बुद्धि के महारथियों ने जौहर को कायराना हरकत या आत्महत्या तक कह दिया। ऐसा नहीं है कि ऐसा केवल पश्चिम परस्त लोग ही कहते हैं बल्कि भारतीय संस्कृति की डींगे हांकने वाले अग्रिम संगठनों के पदाधिकारी भी यह कहते सुने जा सकते हैं कि इतनी महिलाएं यदि तलवार लेकर युद्ध करने जातीं तो कुछ दुश्मनों को तो मारती। लेकिन अपनी पश्चिम प्रभावित सोच को भारतीय संस्करण के आवरण में प्रकट कर भारतीयता के झंडाबरदार बने इन लोगों को कौन समझाए कि इस देश का मूल विचार गीता ज्ञान से निकला है और वहां हार या जीत नहीं बल्कि कर्तव्य कर्म महत्वपूर्ण था और नारी के लिए अपनी कोख की पवित्रता सबसे बड़ा कर्तव्य माना गया था। इसलिए आजकल नारी अस्मिता की बातें करने वाले लोगों को यदि वास्तव में इस अस्मिता की चिंता है तो इसे पुनः सर्वोच्च मूल्य के स्थान पर प्रतिष्ठापित करना होगा। भोगवादी संस्कृति के वाहक बनकर हम यदि नारी अस्मिता की बात करते हैं तो यह ढकोसला मात्र है ढकोसले कभी जीवन मूल्य नहीं बना करते।

(पृष्ठ दो का शेष)

जीविकोपार्जन... चिकित्सकीय परीक्षण में सफल अभ्यर्थियों को नेशनल डिफेंस एकेडमी के तीन वर्षीय प्रशिक्षण कोर्स में प्रवेश मिलता है। तीन वर्ष पश्चात आर्मी कैडेट्स को इंडियन मिलिट्री एकेडमी, वायुसेना कैडेट्स को एयरफोर्स एकेडमी तथा नौसेना कैडेट्स को इंडियन नेवल एकेडमी में उच्चतर प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है। प्रशिक्षण पूरा होने पर इन्हें सेना में अधिकारी के रूप में नियुक्ति दी जाती है। **क्रमशः**

(पृष्ठ पांच का शेष)

चन्द्रगुप्त... चन्द्रगुप्त की इस विजय की जानकारी उसके भिलसा, उदयगिरी, सांची आदि अभिलेखों से मिलती है अब उज्जैयिनी को चन्द्रगुप्त ने अपनी दूसरी राजधानी बनाया। आर्थिक दृष्टि से भी इस विजय से गुप्त साम्राज्य को अत्यधिक फायदा मिला, पश्चिमी भारत के प्रसिद्ध बंदरगाह भृगुकच्छ पर अधिकार से विदेशी व्यापार में भी वृद्धि हुई। इस विजय के उपरान्त चन्द्रगुप्त ने पूर्वी भारत में एक सैनिक अभियान किया। पूर्वी भारत के कुछ शासकों ने चन्द्रगुप्त के विरूद्ध एक संघ बना लिया था इस संघ को चन्द्रगुप्त ने बंगाल के किसी युद्ध क्षेत्र में परास्त कर उनके राज्यों को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया था। इस विजय के बाद चन्द्रगुप्त ने सिंधु नदी को पार करके बल्ख क्षेत्र के वाहलिकों को परास्त किया। इन विजयों के बाद गुप्त साम्राज्य सुदूर दक्षिण को छोड़कर पूरे भारत वर्ष पर विस्तारित था। अपने पिता समुद्रगुप्त की तरह चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने भी अपने दिग्विजय अभियान के पश्चात् अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया। **(क्रमशः)**

सांगसिंह लुणु का देहावसान

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **सांगसिंह लुणु** का 10 नवम्बर की रात्रि को देहावसान हो गया। श्रावण कृष्ण नवमी संवत् 2011 को जन्मे सांगसिंह अक्टूबर 1964 में भाप (बाड़मेर) में पहली बार शिविर में आए। उन्होंने अपने जीवन में 17 उ.प्र.शि., 21 मा.प्र.शि., 19 प्रा.शि. एवं 4 विशेष शिविर किए। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

सांगसिंह लुणु

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

हेमसिंह पुत्र उम्मेदसिंह सुल्ताना

चन्द्रपालसिंह पुत्र भंवरसिंह झंझेऊ

महेन्द्रसिंह पुत्र रामसिंह झंझेऊ

हमारे प्रिय **हेमसिंह** पुत्र उम्मेदसिंह सुल्ताना

(सहायक आचार्य राजकीय विधि कॉलेज),

चन्द्रपालसिंह पुत्र भंवरसिंह झंझेऊ, (वायुसेना X ग्रुप)

व **महेन्द्रसिंह** पुत्र रामसिंह झंझेऊ (शारीरिक शिक्षक)

के सरकारी सेवा में चयन होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

करणीसिंह भेलू	जेठूसिंह पून्दलसर	रामसिंह भादला	विजयसिंह झंझेऊ
अनोपसिंह भादला	दशरथसिंह पून्दलसर	राजेन्द्रसिंह भादला	संदीपसिंह पून्दलसर
कल्याणसिंह झंझेऊ	भागीरथसिंह झंझेऊ	नरेन्द्रसिंह तोगावास	मांगूसिंह जोधासर
खीवसिंह सुल्ताना	रघुवीरसिंह लखासर	तनवीरसिंह खारी	शार्दुलसिंह दुलरासर
दयालसिंह किशोरपुरा	चन्द्रजीतसिंह किशोरपुरा	हडवन्तसिंह आशापुरा	उम्मेदसिंह नोखा गांव
रेवतसिंह जाखासर			

एवं समस्त स्वयंसेवक, बीकानेर संभाग

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org